भगवान श्रीकृष्ण के व्यक्तित्त्व का परिशीलन

(शिशुपालवध महाकाव्य के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ देबाशिष मिश्र,
सहायक अध्यापक,
संस्कृत विभाग,
फकीरमोहन विश्वविद्यालय
बालेश्वर, ओडिशा

शोधसारांश

शिशुपालवध महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ का संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। माघ की गणना सर्वश्रेष्ठ महाकवि के रूप में की जाती है। उनके द्वारा रचित विंश सर्गात्मक विशिष्ट शिशुपालवध महाकाव्य संस्कृत साहित में बृहदत्रयी में परिगणित है, जिसका मुख्य विषयवस्तु भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा शिशुपाल का वध। एतद्व्यतिरेक युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ, रैवतक पर्वत का वर्णन, जलक्रीडा वर्णन आदि अनेक विषयों का वर्णन हुआ है। चारित्रिक वर्णन में भी महाकवि माघ ने अपनी विद्वत्ता का पारदर्शिता दिखाए हैं। विशेष भाव से भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र, नारद के चरित्र, युधिष्ठिर के चरित्र प्रमुख है। उनमें से भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र अत्यन्त चमत्कारपूर्ण से उनकी मानसिकता तथा व्यक्तित्त्व का पराकाष्ठा, जो की सर्वजन कल्याण निमन्ते, सज्जनों का उद्धार तथा दुष्टों का संहार के लिए विविध स्थल पर वर्णित हुआ है। शत्रुसंहारक भागवान श्रीकृष्ण अपनी राजनैतीक विचक्षणता को दिखाते हुए सभा में शिशुपाल को मारकर पुनः उसे स्वर्गधाम में स्थापित करते है। नारद के आगमन के समय में उनके द्वारा किया गया सत्कार जो की भारतीय संस्कृति का प्रमुख वाक्य "**अतिथि देवो भव**" का वार्ता प्रदान करता है। इसी शोधप्रबन्ध में भगवान श्रीकृष्ण के सांसारिक, भक्तवत्सल, शत्रुसंहारक, जगत उद्धारकारी, राजनीतिज्ञ, सदाचारी, बुद्धिमान, सात्त्विकगुणयुक्त आदि रूप का मनस्तात्त्विक आधार पर अनुशीलन किया गया है।

कूटशब्द- मनोविज्ञान, सदाचार, व्याख्यान, कल्याण, राजनीतिज्ञ, बुद्धिमान, सांसारिक

उपक्रम

संसार का शाश्वत नियम है कि प्रत्येक प्राणी सुख-समृद्धि चाहता है और उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। हालाँकि इसे प्राप्त करने के कई साधन हैं, कविता उन साधनों में सर्वश्रेष्ठ है । पुराण-इतिहास को देखने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, अश्वघोष, भास, श्रीहर्ष, दंडी, बाण और माघ जैसे कवियों ने काव्य के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त की है। शिशुपालवध महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ का संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। माघ की गणना सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कवि के रूप में की जाती है। माघ के बारे में संस्कृत साहित्य में विभिन्न कहावतें और सूक्त हैं। सौभाग्य से, माघ की स्थितिगत अवधि विवादास्पद नहीं है। माघ की स्थिति एवं समय निर्धारण में कुछ आंतरिक एवं बाह्य साक्ष्यों को साक्ष्य के रूप में स्वीकार किया जाता है।

संस्कृत साहित्य में विद्वानों ने महाकवि कालिदास की रचनाओं में उपमाओं की व्यापकता, भारवी के किरातार्जुनीय में अर्थ की गरिमा की विशिष्टता, दण्डी के दशकुमारचरित में पदलालित्य का मूल्याङ्कन किया गया है। परन्तु माघ कृत शिशुपालवध महाकाव्ये में त्रिगुणों के संयोजन एवं समन्वय किया गया है, जो की पाठक के मन में प्रसन्नता व्यक्त करता है।

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् ।

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ।।[1]

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि यद्यपि माघ अपने काव्य में तीनों गुणों का समावेश करते हैं, जहाँ भी वे विशिष्टता, सौन्दर्य और माधुर्य जोडते हैं, वहाँ वे उपमाओं के प्रयोग में कालिदास और अर्थ की गरिमा में भारवि से आगे नहीं निकल पाते। किन्तु वह निश्चित रूप से अपने पदलालित्य की सुंदरता से दण्डी से भी आगे है। उनके पदमाधुर्यता सर्वोपरि प्रसिद्ध है। माघ ने तीनों गुणों को संकलित करने में निरंतर सफलता प्राप्त की है।

श्रीकृष्ण चरित्र का मनस्तात्विक दृष्टि से विश्लेषण

मनोविज्ञान जानवरों के आंतरिक व्यवहार का अध्ययन करता है । मूल रूप से, मनोविज्ञान बाहरी वातावरण पर निर्भर होने के बजाय आंतरिक दुनिया पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके माध्यम से प्रति व्यक्ति व्यवहार में भिन्नता का अध्ययन किया जाता है। मानव स्वभाव के भीतर ज्ञान मनोविज्ञान का अंतिम लक्ष्य है। मनोविज्ञान एक विकासशील प्राकृतिक विज्ञान है जो वास्तव में वस्तुनिष्ठ विज्ञान के लिए लगातार संघर्ष कर रहा है । मनोविज्ञान भी व्यक्ति के स्वभाव के आधार पर उसके व्यक्तित्व को परिभाषित करता है। उदाहरण के लिए, एक मनुष्य दूसरों से किस प्रकार भिन्न है ? व्यक्तित्व में मानवीय गुणों का अध्ययन

[1] संस्कृत साहित्य के इतिहास, पृ.सं., २६९

शामिल है। मनोविज्ञान में व्यक्तिगत भिन्नताओं और सामाजिक संपर्क का अध्ययन भी शामिल है। लोग कैसे शासित होते हैं ? पश्चिमी शिक्षाशास्त्री श्री जंग के अनुसार व्यक्तित्व दो प्रकार के होते हैं अंतर्मुखी और बहिर्मुखी । अंतर्मुखी लोग आत्मकेंद्रित होते हैं और सामाजिक गतिविधियों में भाग नहीं लेते हैं। ये एकांत चाहते हैं । वे दिन में अकेले समय बिताते हैं । वे विनम्र और विचारशील हैं । उदाहरण के लिए, लेखक, दार्शनिक, साधु और बुद्धिजीवी । हालाँकि, वे मिलनसार होते हैं और उनमें स्नेही गुण होते हैं । कुछ दूसरों की मदद करते हैं । वे अपनी मर्जी से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए खुशी से अपना जीवन जीते हैं ।

लोग मृत्यु तक अपना जीवन सामाजिक परिस्थितियों में बिताते हैं । जिस प्रकार मनुष्य का व्यक्तित्व सामाजिक परिवेश को प्रभावित करता है, उसी प्रकार काव्य ग्रंथों के पात्रों का व्यक्तित्व पाठकों को प्रभावित करता है । काव्य ग्रंथों में पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नायक और नायिका का चयन पात्रों के व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर किया जाता है। व्यक्तित्व से हमारा तात्पर्य उन तत्वों के योग से है जो किसी व्यक्ति को समाज में बेहतर स्थान दिलाते हैं, जिसे व्यक्तित्व कहा जाता है। यहां प्रश्न उठता है कि व्यक्तित्व का नाम क्या है ? इसकी प्रकृति क्या है ? ऐसे कई सवाल मन में उठते हैं ।

व्यक्तिगत विविधता प्रकृति का स्वाभाविक गुण है । वैसे तो सामान्यतः सभी लोग समान प्रतीत होते हैं, लेकिन सूक्ष्म अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें कुछ भिन्नता अवश्य होगी । दो लोगों के बीच अंतर का कारण प्रकृति और पर्यावरण है । भाई-बहन शारीरिक, मानसिक, व्यावहारिक और शैक्षणिक उपलब्धियों में भी भिन्न होते हैं । व्यक्तिगत भिन्नता आनुवंशिकता और वातावरण पर आधारित होती है । लोगों में कुछ ख़ासियतें होती हैं, जो उन्हें दूसरों से अलग करती हैं । व्यक्ति की उन्नति शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक भिन्नताओं के अनुसार होती है । दुनिया में दो लोगों के बीच मतभेद होते हैं । एक ही समय में जन्म लेने वाली संतानों में भी समानता नहीं होती । व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार, व्यक्तियों को व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विशेषताओं के आधार पर प्रतिष्ठित किया जाता है ।

कतिपय पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक स्वविचार धारा के आधार पर व्यक्तित्व की परिभाषाएँ दिए हैं ।

1. Personality is the quality of the individual's total behaviour- R. S. Woodworth.[2]

[2] Psychology A study of Mental Life, pp.560

2. Personality is the sum total of all biological, innate, dispositions, impulses, tendencies, appetites and instincts of the individual and the acquired disposition and tendencies acquired by experience- Dr Morton Prince.[3]
3. Personality is a dynamic organisation within the individual of those psychophysical systems that determine his unique adjustment to his environment- Gordon W Allport.[4]

इस प्रकार मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर इस शोध का लक्ष्य शिशुपाल वध महाकाव्य के भगवान श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व की मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समीक्षा करना है।

१. सदाचारी श्रीकृष्ण

शिशुपाल का वध श्रीकृष्ण को सबसे उत्कृष्ट व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करता है। क्योंकि वह शिशुपाल का संहारक है। निम्नोल्लिखित श्लोक से भगवान श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व का परिचय ज्ञात होता हैं।

पतत्पतङ्गप्रतिमस्तपोनिधिः पुरोऽस्य यावन्न भुवि व्यलीयत।

गिरेस्तडित्वानिव तावदुच्चकैर्जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युतः ।।[5]

अर्थात् ऋषि प्रवर नारद जी के आगमन के अवसर पर स्वयं भगवान श्रीकृष्ण स्व आसन से उठकर दण्डायमान होते हुए उनको स्वागत करना यह विषय भारतीय शिष्टाचार परम्परा को दर्शाता है, जो की शास्त्रों में प्रतिपादित है[6]। एतद्वारा स्वयं भगवान श्रीकृष्ण भी **"अतिथि देवो भव"** इसी धेय वाक्य को लोककल्याण निमित्त प्रदर्शित करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण अतिथि सत्कार पूर्वक अपने को ज्ञानी, सामाजिक, धार्मिक और मिलनसार के उदाहरण रूप में प्रस्तुत करते हुए ब्रह्मर्षि नारद को पाद्यादि अर्घ्य प्रदान करते हैं, जीससे उनकी संस्कारपरक मानसिकता छलकती है एवं यह भी भारतीय परम्परा में सर्वग्राह्य है[7]।

पुनः अपने सदाचार भाव को प्रकट करते हुए भगवान श्रीकृष्ण विनम्रतापूर्वक नारद द्वारा अर्पित जल को स्वीकार करते हैं क्योंकि यह जल देवर्षि नारद जी के द्वारा तीनों लोकों

---

[3] Clinical and Experimental Studies in Personality, pp 559

[4] Personality: A Psychological Interpretation, pp. 50

[5] शिशुपालवध, १.१२

[6] ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यूनः स्थविर आयति।
प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान्प्रतिपद्यते ॥ महाभारत, 13. 107.32

[7] तमर्घ्यमर्घ्यादिकयादिपूरुषः सपर्यया स पर्यपूपुजत्।
गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।। शिशुपालवध, १.१४

में भ्रमण करते हुए लाया गया था, जो की अनेक पापों का विनाशकारी है। इसी तथ्य से भगवान श्रीकृष्ण का कुशलतापूर्ण सत्कार का ज्ञान प्राप्त होता है[8]। यथा-

युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकासमासत्।

तनौ ममुस्तत्र न कैटभद्विषस्तपोधनाभ्यागमसंभवा मुदः ।।[9]

२. शत्रुसंहारक एवं जगदुद्धारक भगवान श्रीकृष्ण

शिशुपालवध महाकाव्य में अनेक स्थलों पर भगवान श्रीकृष्ण को जगदुद्धारक और शत्रुसंहारक के रूप में वर्णित किया गया है। यथा प्रथम सर्ग में देवर्षि नारद स्वयं सकंट के समय भागवान श्रीकृष्ण के पास आते हैं, क्योंकि प्रलकालीन समय आते ही स्वयं भगवान सभी जीव समुहों को अपने शरीर में स्थित रखते हैं। महाभारत में इसी विषय का समुचित वर्णन प्राप्त होता है। वहाँ भगवान स्वयं विविध रूप में अवतरित होते हुए सज्जनों का रक्षण तथा धर्म की स्थापना करते है[10]। वर्तमान समय में संकट के समय नारद कृष्ण के पास आये। इसी से कृष्ण प्रसन्न होते हुए दिखाई देता है। कुछ निम्नोक्त श्लोक जो की इस विषय को प्रामाणिक रूप में परिपृष्ट करता है।

उदासितारं निगृहीतमानसैर्गृहीतमध्यात्मदृशा कथंचन।

बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः ।।[11]

इस श्लोक में कृष्ण स्थिर प्रतीत होते हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण दुष्टों का विनाश तो करते हैं, परंतु अपने गुणों का व्याख्यान नहीं करते। इस कारण कृष्ण यहीं स्थिर प्रतीत होते हैं। कृष्ण का व्यक्तित्व संतुलित है। हालाँकि वह कुशल है, फिर भी वह घमंड नहीं करते। वह स्थिर बुद्धि के हैं और उनका व्यक्तित्व धैर्यवान तथा गंभीर है।

निवेशयामासिथ हेलयोद्धृतं फणामृतां छादनमेकमोकसः।
जगत्त्रयैकस्थपतिस्त्वमुच्चकैरहीश्वरस्तम्भशिरःसु भूतलम् ।।[12]

---

[8] अशेषतीर्थोपहृताः कमण्डलोर्निधाय पाणावृषिणाभ्युदीरिताः।
अघौघविध्वंसविधौ पटीयसीर्नतेन मूर्धा हरिरग्रहीदपः ।। तत्रैव, १.१८

[9] तत्रैव, १.२३

[10] असतां निग्रहार्थाय धर्मसंरक्षणाय च।
अवतीर्णो मनुष्याणामजायत यदुक्षये ।।
स एव भगवान् विष्णुः कृष्णेति परिकीर्त्यते।
अनाद्यन्तमजं देवं प्रभुं लोकनमस्कृतम् ।। म.भा., वनपर्वम्, २७२.७१-७२

[11] शिशुपालवध, १.३३

[12] तत्रैव, १.३४

इसी के माध्यम से कृष्ण धार्मिक और सांसारिक प्रतीत होते हैं, क्योंकि कृष्ण का जन्म जगत के कल्याण और धर्म की स्थापना के लिए हुआ था। श्रीमद्भगवद्गीता में भी धर्म स्थापना तथा सज्जनों का उद्धार का उल्लेख हुआ है।[13]

निजौजसोज्जासयितुं जगद्रुहामुपाजिहीथा न महीतलं यदि।

समाहितैरप्यनिरूपितस्ततः पदं दृशः स्याः कथमीश मादृशाम् ।।[14]

उपरोक्त श्लोक में, कृष्ण काफी भावुक और मिलनसार हैं क्योंकि, उन्होंने दुनिया के कल्याण के लिए कंस जैसे दुष्टों का विनाश किया। वह सात्विक गुणों से संपन्न है और संसार में सात्विकता का प्रसार करते है। इसी सात्त्विकगुण श्रीमद्भागवतपुराण में उल्लिखित है की जब स्वयं परमात्मा जगत के स्थिति, उत्पत्ति और प्रलय निमन्ते विष्णु, ब्रह्मा एवं रुद्र के रूप में प्रकट होते हैं, तब स्वयं सत्त्वगुणरूपी भगवान विष्णु के माध्यम से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है[15]। इसके अलावा, वह दुष्टों का विनाश करके और संतों का सम्मान करके दुनिया में न्याय का मार्ग स्थापित करते हैं।

श्रीकृष्ण का जगत कल्याण भावना को वर्णन करते हुए शिशुपालवध महाकाव्य में कहा गया है की-

उपप्लुतं पातुमदो मदोद्धतैस्त्वमेव विश्वंभर विश्वमीशिषे।

ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः ।।[16]

अर्थात् जब कोई दुष्ट व्यक्ति संसार को उस कष्ट देता है, तब भगवान श्रीकृष्ण संसार को उस कष्ट से मुक्त कराने के लिए उसकी विनाश करते हैं। ऐसे लोग संसार के लिए सदैव मंगलकारी होते है और सदैव सभी प्राणियों के कल्याण के बारे में सोचते हैं। इस पद्य के माध्यम से श्रीकृष्ण के सांसारिक और बहिर्मुखी स्वभाव का लक्षण प्रतीत होता है।

---

[13] यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ श्रीमद्भगवद्गीता, ४.७-८

[14] शिशुपालवध, १.३७

[15] सत्त्वं रजस्तम इति प्रकृतेर्गुणास्तै
र्युक्तः परः पुरुष एक इहास्य धत्ते।
स्थित्यादये हरिविरिञ्चिहरेति सज्ञाः
श्रेयांसि तत्र खलु सत्त्वतनोर्नृणास्युः ।। भा.पु., १.२.२३

[16] शिशुपालवध, १.३८

पुनः कृष्ण सांसारिक होने के लक्षित करते हुए वर्णित होता है की-

करोति कंसादिमहीभृतां वधाज्जनो मृगाणामिव यत्तव स्तवम् ।

हरे हिरण्याक्षपुरः सरासुरद्विपद्विषः प्रत्युत सा तिरस्क्रिया ।।[17]

अर्थात् जब संसार में कोई विपदा आती है तो उसे रोकने के लिए वे पुनः अवतार लेते हैं। इधर नारद कहते हैं कि वर्तमान में शिशुपाल का वध एक अवशेष है।

३. कुशल राजनीतिज्ञ भगवान श्रीकृष्ण

कृष्ण को एक राजनीतिज्ञ के रूप में देखा गया है, क्योंकि नारद के जाने के बाद कृष्ण ने सभा के समक्ष शिशुपाल के वध की चर्चा की थी। इसका आभास द्वितीय सर्ग में प्राप्त होता है।

द्योतितान्तः सभैः कुन्दकुड्मलाग्रदतः स्मितैः ।

स्नपितेवाभवत्तस्य शुद्धवर्णा सरस्वती ।।[18]

सच्ची राजनिति वह है जिससे समाज में बर्बरता, निरङ्कुशता एवं असभ्यता का उपशमन कर सभ्य एवं मर्यादित समाज को स्थापित करना है। इसीलिए वे यहां एक कुशल राजनीतिज्ञ नजर आते हैं। कार्यों को पूरा करने के लिए कुशल रणनीतियों की पहचान कराते हैं, आवश्यकतानुसार अपनी पराक्रम को अनुबंधित या विस्तारित करने में सक्षम होते हैं। श्रीकृष्ण एक कुशल एवं सफल प्रबंधक हैं।

पुनः अपनी राजनैतिक विचारों का प्रदर्शित करते हुए भगवान श्रीकृष्ण शिशुपाल का वध करने से पूर्व सभा गुह में उपस्थित सभी पारिषद वर्ग से स्वविचार के वारे में जानना चाहते हैं। इसी विषय का प्रतीकात्मक रूप जैसे नाटक के प्रारम्भ से पूर्व नान्दी, वाद्ययन्त्र आदि का आवश्यक होता है, वैसे ही यहाँ दर्शाया गया है।

भवद्भिरामवसरप्रदानाय वचांसि नः ।

पूर्वरङ्गः प्रसङ्गाय नाटकीयस्य वस्तुनः ।।[19]

जब भगवान श्रीकृष्ण अपनी अग्रज बलराम और उद्धव के समक्ष अपना मत को प्रकाश करते हुए कहते है की शिशुपाल का वध करने में विलम्ब नहीं होना चाहिए। उदाहरण के रूप में कहते है की हिताभिलाषी व्यक्ति को बढते हुए शत्रु की उपेक्षा नहीं करना चाहिए, क्योंकि

---

[17] तत्रैव, १.३९

[18] तत्रैव, २.७

[19] तत्रैव, २.८

बढने वाले रोग तथा शत्रु को राजनीतिज्ञ विद्वानों ने समान घातक कहा है। यहाँ राजनीति के कूटनैतिक भावना को प्रदर्शित किया गया है, जो निम्नोल्लिखित श्लोक में वर्णित है-

उतिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता।

समौ हि शिष्टैराम्नातौ वत्सर्यन्तावामयः स च ।।[20]

पुनः कृष्ण मिलनसार प्रतीत होने का वर्णन यहां दिखाया गया है, जैसै-

न दूये सात्वतीसूनुर्यन्मह्यमपराध्यति।

यत्तु दन्दह्यते लोकमदो दुःखाकरोति माम् ।।[21]

शिशुपाल उनके पिता की बहन का पुत्र है। हालाँकि, उन्होंने कहा, **"जो मुझे पीडा पहुँचाता है वह मेरा शत्रु नहीं है, लेकिन जो दुनिया में परेशानी पैदा करता है वह मेरा दुश्मन है"**। यह कृष्ण की अपनी पीडा के प्रति सहनशीलता को दर्शाता है। इसके अलावा, परोपकार का गुण इस बात में देखा जाता है कि व्यक्ति को दूसरों का दर्द बर्दाश्त नहीं करना चाहिए।

मम तावन्मतमिदं श्रूयतामङ्ग वामपि।

ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः संदिग्धे कार्यवस्तुनि ।।[22]

इस श्लोक में कृष्ण को बुद्धिमान माना गया है, क्योंकि मनुष्य संशयशील होता है। इसी कारण वह बलराम और उद्धव के विचार जानने को उत्सुक हैं। संदेहपूर्ण मन से कोई निर्णायक कदम नहीं उठाया जा सकता। अत: शंकाओं को दूर कर एक निश्चित मार्ग पर चलने के लिए निर्णायक बुद्धि की आवश्यकता होती है। इसलिए श्रीकृष्ण की बुद्धि उच्च स्तर की है और उनकी मानसिक सन्तुलन भी उच्च स्तर की है। पुनः श्रीकृष्ण मिलनसार और उत्साही दिखाई देते हैं, क्योंकि कृष्ण युद्ध के मैदान में कौमोदकी की गदा से शत्रुओं का नाश करते हैं। श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में आत्मविश्वास, प्रतिभाशाली बुद्धि जैसे मानसिक गुण हैं[23]।

विनम्र वक्ता के रूप में श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व का प्रतिपादन किया गया है, क्योंकि सद्गुणी व्यक्ति सारयुक्त बातें कहकर चुप हो जाते हैं। यथा-

यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माधवः।

---

[20] शिशुपालवध, २.१०

[21] तत्रैव, २.११

[22] तत्रैव, २.१२

[23] विरोधिनां विग्रहभेददक्षा मूर्तेव शक्तिः क्वचिदस्खलन्ती।
नित्यं हरेः संनिहिता निकामं कौमोदकी मोदयति स्म चेतः ।। तत्रैव, ३.१८

विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः ।।[24]

श्रीकृष्ण आवेगों को नियंत्रित करने में कुशल हैं। उनके व्यक्तित्व में करुणा, सहनशीलता और सद्भाव जैसे भावनात्मक गुण झलकते हैं।

सांसारिक और बहिर्मुखी स्वरूप का लक्षण श्रीकृष्ण के चरित्र में देखा जाता है क्योंकि, कृष्ण दुष्टों का नाश करते हैं। उदाहरण स्वरूप-

सुखवेदनाहृषितरोमकूपया शिथिलीकृतेऽपि वसुदेवजन्मनि।

कुरुभर्तुरङ्गलतया न तत्यजे विकसत्कदम्बनिकुरम्बचारुता ।।[25]

अब वह युधिष्ठिर की सभा में शिशुपाल को मारने जाते हैं, वहाँ श्रीकृष्ण के आलिंगन में युधिष्ठिर को भी सुख का अनुभव हुआ। श्रीकृष्ण चिंतामुक्त और मन से सदैव प्रसन्न रहने वाले हैं, इसलिए यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता है कि उन्हें देखकर बाकी सभी प्रसन्न हो जाते हैं। पुनः त्रयोदशसर्ग में वर्णित होता है की सभा में उन्होंने सभी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा क्योंकि अच्छे लोग कभी किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते। सभी के कल्याण की चिंता करने वाले भगवान कृष्ण के सामाजिक और नैतिक गुण इस बात से परिलक्षित होते हैं कि सात्विक लोग सुख-समृद्धि में भी सभी लोगों को याद करते हैं[26]।

सुतरां सुखेन सकलक्लमच्छिदा सनिदाघमङ्गमिव मातरिश्वना।

यदुनन्दनेन तदुदन्वतः पयः शशिनेव राजकुलमाप नन्दथुम् ।।[27]

पुनः इस श्लोक में कृष्ण बहिर्मुखी प्रतीत होते हैं, क्योंकि जिस प्रकार गर्मी से पीड़ित शरीर को ठंडी हवा से और समुद्र को चंद्रमा से राहत मिलती है, उसी प्रकार भगवान कृष्ण के आने से युधिष्ठिर की सभा को राहत मिलती है। इस विषय को भागवत पुराण में अत्यन्त चमत्कारपूर्ण शैली से वर्णन किया गया है[28]।

विद्विषोऽद्विषुरुद्वीक्ष्य तथाप्यासन्निरेनसः।

अरुच्यमपि रोगघ्नं निसर्गादेव भेषजम् ।।[29]

---

[24] तत्रैव, २.१३

[25] तत्रैव, १३.१३

[26] हरिराकुमारमखिलाभिधानवित्स्वजनस्य वार्तमयमन्वयुक्त च।
महतीमपि श्रियमवाप्य विस्मयः सुजनो न विस्मरति जातु किंचन ।। तत्रैव, १३.६८

[27] तत्रैव, १३.६५

[28] भा.पु. १०.७४. २-५

[29] शिशुपालवध, १९.८९

उपरोक्त श्लोक में कृष्ण सात्विक प्रतीत होते हैं, क्योंकि पुण्यात्माओं की उपस्थिति में शत्रुओं का समूह पापरहित हो जाता है। और जैसे अप्रिय औषधि रोग को नष्ट कर देती है, वैसे ही धर्मात्मा के सहयोग से पाप नष्ट हो जाता है। सद्गुणों की उपस्थिति से पूरे वातावरण में सात्विक वातावरण बनता है। अत: यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उनके सामाजिक गुणों का इतना प्रभाव है कि कृष्ण के सात्विक व्यक्तित्व के प्रभाव से अन्य लोग भी सात्विक बन जाते हैं।

उपसंहार

उपरोक्त अनुशीलन से यह ज्ञात होता है की भगवान क्षीकृष्ण स्वयं परमात्मा होते हुए भी मानव कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, जो उनकी दृढ मानसिकता और जगत कल्याणकारी के रूप में उन्हें प्रतिष्ठित करता है। वह स्वयं भगवान होते हुए भी कुशल राजनीतिज्ञ का स्वरूप को धारण करते हैं। पुनः भगवान अपने भक्तों के रक्षा निमित्त शत्रुसंहारक भी वन जाते हैं। यह सभी गुण उनकी उत्कृष्ट व्यक्तित्व का तथा सात्त्विक गुण युक्त विचारों को लक्षित करता है, जो की भारतीय समाज में आदर्श चरित्र के रूप में सर्वजनादृत होता है।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1) *महाभारत*, गीताप्रेस, गोरखपुर.

2) *श्रीमद्भागवतमहापुराण*, गीताप्रेस, गोरखपुर.

3) *श्रीमद्भगवद्गीता*, गीताप्रेस, गोरखपुर.

4) *शिशुपालवध महाकाव्य*, त्रिपाठची श्री रामप्रताप शास्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग.

5) *शिशुपालवधम्*, शास्त्री श्री पण्डित हरगोविन्द, चौखम्भा विद्या भवन, वारणसी, २०२१.

6) *शिशुपालवध*, सम्पादक- शास्त्री अनन्तराम, चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वारणसी, 1985.

7) *संस्कृत साहित्य का इतिहास*, शर्मा उमाशङ्कर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी, २०१७.

8) *Clinical and Experimental Studies in Personality*, Prince Mrton, Cambridge, Massachusetts, Sci Art Publishers, 1929.

9) *Personality: A Psychological Interpretation*, Allport Gordon W, New York, Henry Holt and Company, 1938.

10) *Psychology A study of Mental Life*, Woodworth Robert S, New York, Henry Holt and Company, 1923.

11) *Śiśupalavadha of Magha*, Edited by M.S. Bhandare, Messrs Gopal Narayuan & Co., Kalbadevi Road, Bombay, 1932